The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 2 | Issue 3 | March 2024
ISSN: 2583-973X (Online)
Website: www.theacademic.in

स्वामी विवेकानंदः आधुनिक भारत के पथ प्रदर्शक के रूप में

राजेश कुमार यादव

असिसटेन्ट प्रोफेसर बी0एड0 विभाग

किसान स्नातकोत्तर महाविद्यालय

रकसा, रतसर–बलिया।

स्वामी विवेकानन्द को भारत के महानतम प्रभावशाली आध्यात्मिक,दार्शनिक,शिक्षाविद और विचारक में से एक माना जाता है। रामकृष्ण परमहंस उनके आध्यात्मिक गुरू थे जिन्होंने रामकृष्ण मिशन की स्थापना की थी। स्वामी विवेकानंद का युवाओं के प्रति सकारात्मक सोच, सामाजिक समस्याओं के प्रति उनका व्यापक दृश्टिकोण और वेदांत दर्षन पर अनेक अनगिनत प्रवचन उनके विचारों को जानने का संदर्भ प्रदान करता है। विवेकानंद का मानना था कि शिक्षा केवल सूचना ही नहीं है यह हमारे दैनिक जीवन जीने का सहारा भी है। ऐसा कहा जाता है कि विवेकानंद जी का प्रमुख उद्देश्य गरीब लोगों के उत्थान के द्वारा देश का विकास करना था। वह मानव जाति के प्रेमी थे। उन्होंने शांति और भाईचारे को बढावा देने का प्रयास किया। वेदांत दर्शन के माध्यम से विवेकानंद जी ने महसूस किया कि भारतीय युवा समाज को बदल सकते हैं। स्वामी विवेकानंद जी ने विशेष रूप से युवा चेतना के लिए कार्य किया। स्वामी विवेकानंद जी प्राचीन भारतीय संस्कृति का सम्मान करते थे और तार्किक सोच के बारे में बात करते थे।

स्वामी विवेकानंद जी अपनी दूरदर्शिता और देश की सामाजिक,आर्थिक नैतिक और आध्यात्मिक संरचना के प्रति संवेदनशीलता के प्रति लोकप्रिय हुए। वे विलक्षण प्रतिभा के धनी थे। स्वामी विवेकानंद जी के भाषणों और व्याख्यानों से अनेक युवा समाज सेवा और चरित्र निर्माण के प्रति उन्मुख हुए। स्वामी विवंकानंद जी ने अपना जीवन युवाओं का मार्गदर्शन और अपने राष्ट्र का समर्थन करने के लिए समर्पित कर दिया। स्वामी विवेकानंद जी ने अपने पूरे जीवनकाल में युवाओं के लिए एक महान प्रेरणा और आदर्श थे और उनके विचारों से आज भी हमारे देश के युवा प्रेरित होते हैं।

उद्देश्य– इसका प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित है–

- .आधुनिक भारत के निर्माण के लिए स्वामी विवंकानंद जी के दर्शन का अध्ययन करना।
- भारतीय मूल्य प्रणाली और आधुनिक विज्ञान में स्वामी जी के योगदान की समीक्षा करना।

- सभी मनुष्यों के लिए स्वामी जी की अनुशंसा का पता लगाना।

शोध–विधि–यह अध्ययन अनुसंधान के गुणात्मक दृष्टिकोण के अनुसार दस्तावेज समीक्षा की पद्वति के आधार पर आयोजित किया गया था। यह पेपर विभिन्न पुस्तकों,शोध,लेख,पत्रिकाओं,शोध जर्नल और ई जर्नल जैसे प्राथमिक स्रोतों के आधार पर एकत्र किया गया। प्रस्तुतीकरण के लिए एकत्रित सामग्री को तैयार कर उसका विश्लेषण किया गया। जानकारी एकत्र करने के लिए उपयोग की जाने वाली विधियां,दस्तावेज समीक्षा,अभिलेखीय जांच प्रतिनिधि विषय थे जो सभी सामग्रियों में पाये गये थे। इस अध्ययन में स्वामी विवेकानंद जी के जीवन चरित्र और विभिन्न विषयों पर विचारों का अध्ययन किया गया। आधुनिक भारत के निर्माण के परिप्रेक्ष्य में विश्लेषण किया गया। इसके लिए शोधकर्ताओं के कुछ दस्तावेजों का उपयोग किया गया है जो कि विवेकानंद जी के जीवन से संबंधित है।

स्वामी विवेकानदं और आधुनिक भारत का निर्माण– इतिहासकार स्वामी विवंकानंद जी के जीवन और कार्य को कई प्रकार से चिन्हित करते हैं। यह उन तरीकों का भी प्रतीक है जिनसे कोई परम्परा आधुनिक होती है या आधुनिकता के वैकल्पिक रूपों का निर्माण करता है। आधुनिक भारत के निर्माण में स्वामी स्वामी जी के योगदान को चार तरीकों से अभिवयक्त किया जा सकता है। पहला विवेकानंद जिन्होंने पहली बार महसूस किया कि हमारा रोजमर्रा का जीवन आध्यात्मिक होने पर ही अधिक सार्थक होगा। यह इसी आध्यात्मिकता में था उन्होंने जो पुनः खोजा वह स्वयं के लिए और विश्व के लिए भारत का संदेश था। स्वामी विवेकानंद जी यह कहते थे कि आध्यात्मिक आत्म साक्षात्कार हमें आगे ले जाता है। लोग अपनी संभावनाओं के लिए और अधिक समझने लगे विशेषकर 19 वीं शताब्दी के भारत जैसे उपनिवेशित समाज के संदर्भ में यह था। यह पुरूषों और महिलाओं के लिए अपने आप में एक अधिक आत्म विश्वास पैदा करने के समान है। भले ही स्वामी जी ने राजनीतिक व्यवहारिकता को खारिज किया और सामाजिक और धार्मिक सुधारों को प्रेरित किया लेकिन वे हमेशा गरीब लोगों के शिक्षा के माध्यम से सशक्तिकरण की बात करते थे। स्वामी विवेकानन्द जी हमेशा सामाजिक रूप से हाशिये पर पडे और उत्पीडितों के लिए कार्य करते रहे क्यों कि स्वामी जी शिक्षा के माध्यम से इन सभी लोगों का उत्थान करना चाहते थे। विवेकानंद जी का मानना था कि भगवान विशेष रूप से गरीब लोगों (दरिद्रनारायण) में निवास करता है। स्वामी जी की निरंतर ईच्छा थी कि विभिन्न राष्ट्रों की सभा में भारत एक गौरवशाली देश रहे। स्वामी जी का कहना था कि महत्वपूर्ण ऐतिहासिक परिवर्तनों के बावजूद हमारे देश की एकता और अखण्डता कायम है।

भारतीय मूल्य प्रणाली में स्वामी जी का योगदान–महान दार्शनिक और समाज सुधारक स्वामी विवेकानंद जी ने अपने जीवन का अंतिम समय मानवता को उन्नत करने के समर्पित कर दिया। उन्होंने मानव जाति की उत्कृष्टता के लिए मनुष्य के शरीर और आत्मा की पवित्रता पर जोर दिया। स्वामी विवेकानंद जी की सभी शिक्षायें और उपदेश विशिष्ट थे। मनुष्य निर्माण, चरित्र निर्माण और विचारों को आत्मसात करना स्वामी विवेकानंद जी की शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य था। भारत की प्राचीन मूल्य प्रणाली मानव जाति की महान विरासत है। हम देखते हैं कि हमारा

इतिहास,संस्कृति, हमारी शैक्षिक प्रणालियां नेतृत्व मूल्य और प्रबंधकीय प्रक्रिया हमारे ऋषि मुनियों के द्वारा डिजाईन की गई है। वे उस समय के ज्ञान और प्रेरणा के महान स्रोत थे। वर्तमान समय की शिक्षा प्रणाली पाश्चात्य पर आधारित है। यह शिक्षा प्रणाली मनुष्य के आंतरिक उपकरण, उसके दिमाग और उसके जीवन को निखारने और विकसित करने की उपेक्षा करती है। यह बालक की जन्मजात शक्तियों की भी उपेक्षा करती है। दिव्यता स्वयं और केवल शरीर के भीतर, मन और बुद्धि पर केन्द्रित है। यह मन की एकाग्रता और आंतरिक शक्तियों को विकसित करने पर ध्यान देती है। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान आधुनिक भारत के कुछ महाने नेताओं ने ब्रिटिश व्यवस्थओं को चुनौती दी थी। उन्होंने शिक्षा के शक्तिशाली दर्शन भी विकसित किये ताकि छात्रों को न केवल भारतीय विरासत का पाठ पढाया जा सके बल्कि उन्हें भारत की भविष्य की महानता के लिए तैयार करे। स्वामी विवेकानंद जी बच्चों को भारतीय मूल्यों की शिक्षा देना चाहते थे। वह उन मूल्यों को विकसित करना चाहते थे जो मनुष्य निर्माण और चरित्र निर्माण की शिक्षा दे। उन्होंने वैदान्तिक ज्ञान को आधार मानकर प्रत्येक धर्म के सत्य और योग को स्वीकार किया। उन्होने सत्य और चरित्र निर्माण के द्वारा युवाओं के लिए भविष्य के द्वारा खोले।

06. चरित्र निर्माण के बारे में स्वामी जी के विचार– स्वामी जी ने यह महसूस किया कि अच्छा चरित्र बनाने के लिए तीन बातें आवश्यक हैं–

01–अच्छाई की शक्तियों का विकास

02–ईर्ष्या और संदेह का अभाव

03–उन सभी की मदद करना जो अच्छा बनने और करने का प्रयास कर रहे हैं

स्वामी विवेकानंद जी ने सुझाव दिया था कि ईर्ष्या और दंभ को त्यागने का प्रयास करें और दूसरों के लिए एकजुट होकर काम करना सीखें। उन्होंने कहा कि पवित्रता, धैर्य और दृढता के द्वारा सभी बाधाओं पर काबू पाया जा सकता है। उन्होंने लोगों को हिम्मत से काम करने की सलाह दी। स्वामी विवेकानंद जी के अनुसार धैर्य और स्थिर होकर कार्य करना ही सफलता प्राप्त करने का एकमात्र रास्ता है। स्वामी विवेकानंद के अनुसार स्वयं और ईश्वर पर विश्वास ही व्यक्ति की महानता और सफलता पाने का रहस्य है। स्वामी विवेकानंद जी ने इतिहास का अवलोकन किया और कहा कि दुनिया कुछ लोगों का इतिहास है, जिन्हें खुद पर भरोसा था। यह विश्वास ही है जो भीतर से दिव्यता को बुलाता है।

07– सभी मनुष्यों को स्वामी विवेकानंद जी की शिक्षायें–स्वामी विवेकानंद जी की शिक्षायें हम सभी के लिए प्रेरणा का खजाना हैं। चाहे हम छात्र हों, शिक्षक हों,आम व्यक्ति हों या कोई अन्य पेशेवर। स्वामी विवेकानंद जी के विचारों के कुछ प्रमुख संग्रह निम्नलिखित हैं–

01–खडे हो जाओ,साहसी बनो,मजबूत बनो। सारी जिम्मेदारी अपने कंधों पर लें और जाने कि आप अपने भाग्य के निर्माता स्वयं हैं।

02– उठो जागो और संघर्ष करो जब तक कि लक्ष्य की प्राप्ति न हो जाये।

03– अच्छा बनना और अच्छा करना,यही सम्पूर्ण धर्म है।

04– शक्ति ही जीवन है और कमजोरी ही मृत्यु है।

05– सारी शक्ति आपके भीतर है,आप कुछ भी और सब कुछ कर सकते हैं। स्वयं पर विश्वास करें।

06– आप जो भी सोचेंगे वही होगा। यदि आप अपने को कमजोर समझते हैं तो आप कमजोर होंगे। अगर आप अपने आप को ताकतवर समझते हैं तो आप मजबूत होंगे।

07– अपनी ताकत में खडे रहो और मरो। संसार में यदि कोई पाप है तो वह है दुर्बलता। सभी कमजोरियों से दूर रहो क्यों कि कमजोरी पाप है और कमजोरी मृत्यु है।

08– न धन से लाभ होता है, न नाम से लाभ होता है, न प्रसिद्वि से लाभ होता है,न विद्या से, यह चरित्र ही है जो मतभेदों की कठोर दीवारों को तोड देता है।

09– वह नास्तिक है जो खुद पर विश्वास नहीं करता। पुराने धर्म में यह कहा गया है कि जो ईश्वर में विश्वास नहीं करता वह नास्तिक है जबकि नये धर्म में यह कहा गया है कि वह नास्तिक है जो खुद पर विश्वास नहीं करता।

10– खुद को कमजोर समझना सबसे बडा पाप है।

11– एक विचार उठाओ, उसे विचार को अपना जीवन बनाओ। उसके बारे में सोचो। उसके सपने देखो। उसके अनुसार जियो। मस्तिष्क, मांसपेशियों,तंत्रिकाओं और अपने शरीर के प्रत्येक हिस्से को पूण होने दो।

12– आपके देश को नायकों की आवश्यकता है नायक बनो आपका कर्त्तव्य है कि आप काम करते रहो। सब कुछ अपने आप अच्छा हो जायेगा।

आधुनिक विज्ञान में स्वामी विवेकानंद जी का योगदान–अपनी पुस्तक राजयोग में स्वामी विवेकानंद जी अलौकिक पर पारंपरिक विचारों और विश्वास की खोज करते हैं कि राजयोग का अभ्यास मानसिक शक्तियों को विश्वास प्रदान करता है जैसे– दूसरों के विचारों को पढना, प्रकृति की सभी शक्तियों को नियंत्रित करना, लगभग सर्वज्ञ बनना,

दूसरों के शरीर को नियंत्रित करना। स्वामी विवेकानंद जी किसी भी बात को स्वीाकार या अस्वीकार करने का निर्णय लने से पहले पूरी तरह से परीक्षण की बात करते हैं। उनका कहना था कि उचित जांच के बिना किसी भी बात को खारिज करना स्पष्टवादी और वैज्ञानिक दिमाग का संकेत नहीं है। वह आगे कहते हैं कि व्यक्ति को अभ्यास करना चाहिए और देखना चाहिए कि ये चीजें घटित होती हैं या नहीं। विश्व धर्म संसद शिकागो(1893) में पढे गये अपने पेपर में विवेकानंद जी ने भौतिकी के अंतिम लक्ष्य के बारे में भी संकेत दिया– विज्ञान एकता की खोज के अलावा और कुछ भी नहीं है। जैसे ही विज्ञान पूर्ण एकता तक पहुचेगा वह आगे बढने से रूक जायेगा । इस प्रकार रसायन विज्ञान तब तक आगे नहीं बढ सकेगा जब तक ऐसे तत्व की खोज नही कर लेता जिससे अन्य सभी तत्व बनाये जा सकते थे। भातिक विज्ञान तक रूकेगा जब तक यह एक ऐसी उर्जा की खोज में अपनी सेवाओं को पूरा करने में सक्षम होगा जिसकी अन्य सभी अभिव्यक्तियां हैं।

निष्कर्ष– स्वामी विवेकानंद जी ऐसे पहले धार्मिक नेता थे जिन्होने बडे पैमाने पर जन शिक्षा की वकालत की थी और हमारे देश भारत के गौरव को वापस लाने के लिए प्रतिबद्व थे। उनके अनुसार पवित्रता, धैर्य और दृढता ही चरित्र के प्रमुख गुण हैं। इसीलिए ही विवेकानंद जी ने चरित्र निर्माण की शिक्षा पर बल दिया। विवेकानंद जी हम सभी के प्रेरण स्रोत हैं और रामकृष्ण मिशन संस्था में उनके सुंद शिक्षण विचारों का पालन किया जाता है। स्वामी विवेकानंद जी ने किसी भी निर्णय को स्वीकार करने या अस्वीकार करने का निर्णय लेने से पहले उसका पूरी तरह से परीक्षण करने में विश्वास करते थे जो आधुनिक विज्ञान की ओर संकेत करता है।

उपरोक्त विवरण के आधार पर हम यह कह सकते हैं कि विवेकानंद जी की शिक्षाओं ने आधुनिक भारत के निर्माण में एक बिल्डिंग ब्लाग का काम किया था। स्वामी विवेकानंद जी को पहले ही यह विश्वास हो गया था कि मानव जाति संकट से गुजर रही है। इस अद्वितीय गुण ने उन्हें सम्पूर्ण मानव जाति का नेता बना दिया था। विवेकानंद जी ने कई कानूनों और विधियों का वर्णन किया जो आज कहीं अधिक प्रासंगिक हैं। वे एक समाज सुधारक और राष्ट्रवादी नेता थे। स्वामी विवेकानंद जी अपने समय की कठिन चुनौतियों के बावजूद दुनिया भर के लाखों लोगों के लिए आशा और प्रेरणा की किरण बन गये थे। स्वामी विवेकानंद जी के जन्मदिन को आज भी राष्ट्रीय युवा दिवस के रूप में मनाया जाता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची–

(1)रवि,एस0एस0(2016) *शिक्षा का एक व्यापक अध्ययन*,दिल्ली,पी0एच0आई लर्निंग प्राइवेट लिमिटेड

(2)चतुर्वेदी,बी0(2006) *स्वामी विवेकानंद द लिविंग वेदांता,*न्यूयार्क पेंगुइन पब्लिकेशन

(3)बसु,एस0(2002) धार्मिक पुनरोत्थानवाद राष्ट्रवादी प्रवचन के रूप मेंः स्वामी विवेकानंद,दिल्ली ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस

(4)स्वामी सी0(1997)भगवान उनके साथ रहते थे,सेंट लुईस,पी0पी0

(5)स्वामी एन(1989) विवेकानंदःएक जीवनी,न्यूयार्क राम कृष्ण विवेकानंद केन्द्र

(6)चौबे,एस0पी0(1983)हमारी शिक्षा समस्यायें,आगरा,विनोद पुस्तक मन्दिर।

(7)अग्रवाल,जे0सी0(2011)उदीयमान भारतीय समाज में अध्यापक,आगरा,अग्रवाल पुस्तक मन्दिर

(8)पाण्डेय,आर0एस(2017)उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षा,आगरा विनोद पुस्तक मन्दिर।

(9)स्वामी,एन0(1964)स्वामी विवेकानंद शताब्दी,दर्शनशास्त्र पूर्व और पश्चिम(हवाई प्रेस विश्वविद्यालय।